स्वतन्त्रता आन्दोलन में समाचार पत्रों द्वारा आम नागरिकों में क्रान्तिकारी विचारों का प्रसार

सचिन कुमार*

सारांशः

आधुनिक युग में समाचार पत्र, सामाजिक, आर्थिक राजनैतिक, सांस्कृतिक सभी विषयों पर जन चेतना के उद्‌भव और विकास तथा जन अभिव्यक्ति का सर्वाधिक महत्वपूर्ण एवं सशक्त माध्यम हैं। जनचेतना के प्रतिबिम्ब के रूप में समाचार पत्र हमारे दैनिक जीवनकाल का अभिन्न अंग बन चुके हैं। वस्तुतः ''व्यक्ति के सम्पूर्ण जीवन में समाचार पत्रों का महत्वपूर्ण स्थान है। जन अभिव्यक्ति के रूप में पत्र–पत्रिकाएं एक सुदृढ सामाजिक संस्थान होती है। ज्ञान–विज्ञान, इतिहास, दर्शन, समाज–विज्ञान आदि विषयों को प्रतिबिम्बित करने और उन्हें एक मंच प्रदान कर सामान्य जन से सम्बद्ध करने का महत्वपूर्ण साधन प्रायः पत्रकारिता ही है।''[1] समाचार पत्र की शक्ति, सामर्थ्य और महत्व को फ्रांस के महान शासक और महान विजेता नैपोलियन बोनापार्ट ने भी स्वीकार करते हुए एक बार कहा था– ''मुझे हजारों संगीनें भी उतना भयतीत नहीं करती हैं, जितना एक अखबार।''[2]

भारत में समाचार पत्र ब्रिटिश शासन के दौरान अपने अस्तित्व में आये, जब ब्रिटिश उपनिवेश के रूप में पराधीनता की बेड़ियों से जकड़ा देश असहाय, निष्प्राण और पतनोन्मुखी समाज और संस्कृति का छायाचित्र प्रस्तुत कर रहा था। औपनिवेशिक संस्कृति और विचारधारा का आंतक दिन–ब–दिन तेज होता जा रहा था। भारत पूर्ण रूप से औपनिवेशिक शक्ति इंग्लेंड के आर्थिक शोषण से त्रस्त था। भारतीय भाषाएँ, धर्म, कला, दर्शन, अर्थव्यवस्था – सब औपनिवेशिक हमले के समक्ष थे। ऐसे समय में भारतीय समाचार पत्रों ने देश के जनमानस में बौद्धिक, सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनैतिक जागरूकता का आवहान किया। औपनिवेशिक काल में समाचार पत्र, भारतीय परिदृश्य के विविध पहलुओं पर जन चेतना जगाने वाले और कलम की शक्ति का आभास कराने वाले सर्वाधिक प्रभावकारी शस्त्र की तरह परिलक्षित हुए। भारतीय राष्ट्रीय जीवन की महत्ती भूमिका निभाई है।

भारत में आधुनिक भारतीय प्रेस का प्रारम्भ 18वीं शताब्दी में उत्तरार्द्ध में विलियम वोल्ट्स द्वारा एक समाचार पत्र के प्रकाशन से प्रारम्भ हुआ। 1780 ई0 में हिक्की द्वारा 'बंगाल गजट' और फिर 1780 में ही 'इण्डिया गजट'[3] जैसे समाचार पत्रों के प्रकाशन के साथ ही भारतीय प्रेस के क्षेत्र में तीव्र गति से विकास हुआ है। ये पत्रकार कम्पनी के अधिकारियों के लिये बडी समस्या बने रहे। 18वीं शताब्दी के अन्त तक भारत में प्रकाशित होने वाले समाचार पत्र, कलकत्ता कैरियर, एशियाटिक मिरर, हेराल्ड, बॉम्बे गजट आदि अंग्रेजी साप्ताहिक समाचार पत्र थे, जिनमें भारतीय हितों में पोषण और संरक्षण का बहुत अभाव था।

भारत में सामाचार पत्रों के प्रारम्भिक दौर के ब्रिटिश पत्रकारों में जेम्स ऑगस्टस हिक्की और बर्किघम का भारतीय समाचार पत्रों के इतिहास में सराहनीय योगदान है इन्होंने ही पत्रकारों में सर्वप्रथम सत्ता के विरूद्ध आलोचनात्मक दृष्टिकोण अपनाने की तथा स्वतन्त्रता की भावना भरी थी, जो पूरे ब्रिटिश शासन काल में प्रेस का अभिन्न अंग बनी रही।

19वीं शताब्दी के प्रारम्भ से ही भारत में जन चेतना की लहरें हिलोरे मारने लगी। इस दौर में जन चेतना के उद्‌भव में स्थानीय भाषाओं में छपे समाचार पत्र और पत्रिकाओं ने महत्वपूर्ण भूमिका निभायी। 1821 ई0 में बंगाली भाषा में 'संवाद कौमुदी' और फारसी में 'मिरातुल अखबार' के प्रकाशन के साथ ही भारत में प्रगतिशील प्रवृत्ति के समाचार पत्रों का आगाज हुआ।[4] अन्य प्रमुख पत्रों में 1830 में बंगदत्त, 1831 में जामे शमशेद और 1851 में रस्त गोफ्तार और अखबार–ए–सौदागर का प्रकाशन शुरू किया।

19वीं शताब्दी के पूर्वार्द्ध के ये समाचार पत्र धार्मिक, दार्शनिक समस्याओं पर विचार तथा विवाद का माध्यम होने के साथ, समाज–सुधार तथा अंग्रेजों द्वारा प्रजातीय भेदभाव के प्रचार के भी वाहक बने।

* असिस्टेन्ट प्रोफेसर, इतिहास विभाग, डी0ए0वी0 पीजी कॉलेज, मुजफ्फरनगर

इस दौर के समाचार पत्रों का सबसे बड़ा योगदान यह था कि इनके माध्यम से भारतीय जनमानस अपनी संस्कृति, समाज, धर्म और दर्शन के विषयों पर जानने लगा। परिणामस्वरूप देश में धार्मिक–सामाजिक सुधार आन्दोलन को प्रोत्साहन मिला। वस्तुतः उन्नीसवीं शताब्दी का यह प्रारम्भिक दौर भारतीय समाचार पत्रों के उद्‌भव और रचनात्मकता का दौर था। श्री अरबिन्दों के अनुसार, ''इस दौर में यूरोप के प्रभाव ने भारत की सोई हुई बौद्धिक शक्ति को सचेत किया और आलोचनात्मक भावना पैदा की। इसने जीवन को पुनर्जागृत किया। इस पुनर्जागृत भावना को नई परिस्थितियों और आदर्शों के आमने–सामने ला खड़ा किया, और यह बात महसूस कराई कि इन नई परिस्थितियों को, आदर्शों को समझने, इनका समावेश करने और इन पर विजय पाने की तात्कालिक आवश्यकता है।''[5] परिवर्तन और प्रगति के इस नए वातावरण में जन चेतना के उद्‌भव और विकास हेतु रचनात्मक प्रयत्नों के विचारों को समाचार पत्र, पत्रिकाओं में अभिव्यक्ति मिली। 19वीं शताब्दी में, भारत का पुनर्जागरण आन्दोलन और समाचार पत्र एक दूसरे के पूरक बने रहे।

1857 ई0 के बाद 19वीं शताब्दी के दूसरे चरण से भारत में समाचार पत्र आंग्ल और देसी भाषाओं के आधार पर विभाजित होने के स्थान पर प्रजातीय आधार पर बंटे दिखाई देते हैं। इस विभाजन का आधार 1857 के बाद से भारतीयों और अंग्रेजों का पूर्णतया भिन्न दृष्टिकोण और भिन्न हित थे। इस काल में आंग्ल भाषा में, अंग्रेजों या एंग्लो–इण्डियन द्वारा प्रकाशित समाचार पत्रों में से अधिकांश सरकार के समर्थक बने गये। इस चरण में अंग्रेज़ों द्वारा सम्पादित प्रमुख पत्र–टाईम्स ऑफ इण्डिया (1861), स्टेट्‌समैन (1878), फ्रैंड ऑफ इण्डिया, इंग्लिश मैन, पायनियर आदि प्रमुख थे। एंग्लो इण्डियन समाचार पत्रों में 'इंग्लिशमैन' सबसे अधिक रूढ़िवादी और प्रतिक्रियावादी समाचार पत्र था, जबकि स्टेट्‌समैन अपने उदार विचारों के लिये प्रसिद्ध था।[6]

ब्रिटिश सरकार के अन्यायपूर्ण कार्यों की भी खूब प्रशंसा करने वाले इन एंग्लो–इण्डियन समाचार पत्रों के कारण जनता में विद्रोह की भावना बढ़ने लगी, जिसकी एक वजह यह भी थी कि इस दौर में डाक–तार विस्तार के साथ, भारत में शिक्षा के क्षेत्र में भी प्रगति चरम पर थी। परिणामस्वरूप ये समाचार अब पहले की अपेक्षा सरलता से हिन्द की आम देशवासियों तक पहुंचने लगे। इन समाचार पत्रों की प्रतिक्रिया में बहुत से योग्य और बुद्धिमान भारतीयों ने देश की जनता में जन–जागृति हेतु अपने विचारों के सुगमता तथा तीव्रता से प्रसार के लिये पत्रकारिता को मुख्य रूप से अपनाया। इस विषय में सुरेन्द्रनाथ बैनर्जी ने लिखा था कि, ''वास्तव में क्रूर शासन जन जागृति का कारण बनते हैं, और जन जागृति जन आन्दोलन को जन्म देती है।''[7]

वस्तुतः 1870 से 1918 ई0 तक का पूरा समय ऐसा था, जब जनचेतना की लहर तो उठनी शुरू हो गयी थी, लेकिन सामूहिक भागीदारी वाले राष्ट्रीय आन्दोलन का स्वरूप का पूरी तरह से अभाव था, जिसे उभारने का दायित्व समाचार पत्रों ने उठाया। चूंकि उस समय भारतीय जनता के पास न कोई संगठन था और न ही कोई संगठित राजनैतिक कार्यक्रम था, इसलिये प्रेस ही उस समय एक ऐसा शस्त्र था, जिसके जरिये जनता को राजनैतिक रूप से पूर्ण शिक्षित–प्रशिक्षित किया जा सकता था और एक राष्ट्रीय विचारधारा का बीज बोया जा सकता था। यहां तक कि इस दौर में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के प्रस्ताव और कार्यवाहियों को भी जनता के मध्य समाचार पत्र ही पहुंचाते थे। राष्ट्रीय आन्दोलन की बुनियाद रखने में समाचार पत्रों और पत्रकारों की महत्ती भूमिका का अन्दाजा इसी तथ्य से लगाया जा सकता है कि 1885 ई0 में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की स्थापना जिन लोगों ने की, उनमें से करीब एक तिहाई पत्रकार बन्धु थे।[8]

19वीं शताब्दी के दूसरे चरण से बीसवीं शताब्दी के प्रारम्भिक वर्षों के इस काल में भारतीय बुद्धिजीवियों ने अंग्रेजी के साथ–साथ विभिन्न स्थानीय भाषाओं में भी बड़े स्तर पर समाचार पत्र निकालने शुरू किये। 1859 ई0 में प्रख्यास समाज सुधारक और राष्ट्रवादी ईश्वर चन्द्र विद्यासागर द्वारा संचालित बंगाली 'सोमप्रकाश' एकमात्र ऐसा समाचार पत्र था, जिसके विरूद्ध लॉर्ड लिटन ने वर्नाक्यूलर प्रेस एक्ट को लागू किया था।[9] ब्रिटिश शासन के संघर्ष के इस शुरूआती दौर (19वीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध से 1918 ई0 तक) में भारतीयों द्वारा संचालित अनेक निडर समाचार पत्रों का जन्म हुआ। द हिन्दू, स्वदेश मित्रम, केसरी, मरहट्‌टा, बंगाली, अमृत बाजार पत्रिका, सुधारक, इण्डियन मिरर, हिन्दुस्तानी, एडवोकेट ऑफ

इण्डिया, द ट्रिब्यून, अखबार ए आम, बंगनिवासी जैसे अखबार अस्तित्व में आये, जिन्होंने स्वतन्त्रता आंदोलन में अपना अद्वित्य योगदान दिया।

इन समाचार पत्रों में सरकारी नीतियों की आलोचना और राष्ट्रीय चेतना के प्रस्फुटन हेतु प्रेरक विचारों के साथ, समाज सुधार और समाज उद्धार से देश की उन्नति की आशा भी की गयी। ये पत्र विभिन्न सामाजिक समस्याओं पर गम्भीर चर्चा किया करते थे। उदाहरण के लिये बालकृष्ण भट्ट ने 'हिन्दी प्रदीप' में सामाजिक कुरीतियों, अन्धविश्वासों, रीति–रिवाजों तथा अंग्रेजी सभ्यता के प्रभाव को लेकर व्यंग्यात्मक लेख लिखा।[10] इन समाचार पत्रों का प्रभाव सिर्फ शिक्षित वर्ग पर ही नहीं था, बल्कि इनकी पहुंच दूर–दराज के गांवों तक भी हो गयी थी। ये अखबार लोगों को राजनैतिक रूप से शिक्षित ही नहीं कर रहे थे, बल्कि उन्हें सामूहिक भागेदारी का पाठ भी सिखा रहे थे।

इस दौर में समाचार पत्रों ने सशक्त मुख्य विपक्षी की भूमिका निभायी। उस समय भारतीय प्रेस का उद्देश्य, सरकारी नीतियों और कानूनों का विरोध था, यद्यपि ये समाचार पत्र सभी सरकारी मुद्दों का गहनता से विश्लेषण करके ही पूर्ण जिम्मेदारी और परिपक्वता के साथ विरोध के स्वरों को मुखरित करते थे। समाचार पत्रों के प्रभाव के विषय में, मई 1886 ई0 में तत्कालीन वाइसराय लॉर्ड डफनि ने लिखा : ''इसमें कोई शक नहीं कि अखबार पढ़ने वालों के दिमाग में यह बात घर करती जा रही है कि हम (अंग्रेज) सामान्यतः पूरी मानव जाति के और विशेषकर भारत के दुश्मन हैं।''[11]

औपनिवेशिक काल के समाचार पत्रों का, विशेष रूप से भारतीय भाषाओं के पत्रों का काम अत्यन्त दुरूह और चुनौतीपूर्ण था, वह एक ओर अगर लोगों में राजनैतिक चेतना जगाने, ब्रिटिश शासन के शोषण चक्र को बेनकाब करने और उसके खिलाफ माहौल बनाने की कोशिश कर रहे थे, तो दूसरी तरह सरकार के पास उन पर अंकुश लगाने की शक्ति थी। ब्रिटिश शासन के दौरान समाचार पत्रों का इतिहास, सरकार द्वारा समय–समय पर आवश्कतानुसार प्रतिबन्ध लगाने की घटनाओं से भरा हुआ है (यद्यपि ये प्रतिबन्ध कड़े एवं लम्बे समय के लिये नहीं लगाये जाते थे)। इस स्थिति में राष्ट्रवादी पत्रकारों को एक ओर तो ऐसी कलात्मकता से लिखना था कि वे ब्रिटिश कानून की पकड़ में न आ सकें, फिर उन्हें इस ढंग से लिखना था कि लोग उन्हें समझ भी सकें। अखबारों के ज्यादातर पाठक कम शिक्षित थे और अखबारों की यह जिम्मेदारी थी कि उन्हें एक बहुत ही जटिल विषय को इन पाठकों तक पहुंचाना था, वह भी कानूनों की दृष्टि से बचते हुए, पत्रकारों ने यह जिम्मेदारी बखूबी निभाई।[12]

1910–1920 ई0 के बीच में उर्दू पत्रकारिता के क्षेत्र में भी विकास हुआ। 1912ई0 में ''अल–हिलाल'' और 1913ई0 में अल–बिलाल पत्रों का कलकत्ता से प्रकाशन आरम्भ हुआ। इसके अलावा हमदर्द, मदीना, हमदम आदि पत्र भी प्रकाशित होने प्रारम्भ हुए। 1910 ई0 में गणेश शंकर विद्यार्थी के द्वारा सम्पादित तेजस्वी पत्र 'प्रताप' का प्रकाशन कानपुर से और 1913 में 'गदर' पत्र का प्रारम्भ सैन फ्रांसिस्को से आरम्भ हुआ। ये दोनों पत्र उग्र राष्ट्रीयता के पोषक, किसान–मजदूरों के समर्थक, असाम्प्रदायिक एवं लोकतन्त्र की भावनाओं से ओतप्रोत थे। वस्तुतः विदेश में रह रहे भारतीयों के मन में देश प्रेम जगाने का श्रेय काफी हद तक 'गदर' पार्टी द्वारा संचालित समाचार पत्रों को जाता है।

भारत में जनचेतना के विकास में महात्मा गांधी का, एक राष्ट्रीय नेता के रूप में ही नहीं, बल्कि एक पत्रकार के रूप में भी बहुमूल्य योगदान था गांधी जी द्वारा सचित 'यंग इण्डिया' और 'हरजिन', गांधी जी के विचारों और राजनैतिक कार्यक्रमों में अवगत कराने के साथ, भारत की आम जनता को एक बड़े सामाजिक–राजनैतिक आन्दोलन के लिये तैयार करने का भी साधन था। समाचार पत्रों के महत्व को स्वीकार करते हुए महात्मा गांधी जी ने 'हरिजन' में लिखा था : ''अहिंसक उपायों में सत्य की विजय के लिये अखबार एक महत्वपूर्ण और निवार्य साधन हैं। शस्त्र बल से युक्त शासन का मुकाबला निर्भय सत्य के उच्चारण से ही सम्भव हो सकता है।''[13]

1919 ई0 से 1947 ई0 के बीच देश के मुक्ति संग्राम के दौर में भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन को लोकप्रिय बनाने में भारतीयों द्वारा सम्पादिक समाचार पत्रों का, विशेष रूप से भारतीय भाषाओं के समाचार पत्रों का अमूल्य योगदान रहा है। इन समाचार पत्रों ने देश के हर कोने–कोने में और समुदाय के लोगों में राष्ट्रीय चेतना जगाने का मुख्य कार्य किया। इन पत्रों के सम्पादकों तथा आम जनता के बीच भावनात्मक एकता तथा सहानुभूति थी। वस्तुतः भारतीय भाषाओं में समाचार पत्रों के प्रकाशन के

कारण ही जनता चेतना एवं जनमत का निर्माण एवं विकास सम्भव हो सका। इन पत्रों ने जनमत को बनाने और उसे प्रतिबिम्बित करने का कार्य अत्यन्त प्रभावकारी रूप में किया।

कुल मिलाकर 19वीं शताब्दी के प्रारम्भ से स्वतन्त्रता प्राप्ति तक पूरे औपनिवेशिक काल में भारत में राष्ट्रीय जागरण के प्रत्येक पक्ष के विषय में – चाहे वह सामाजिक हो या संस्कृतिक, आर्थिक हो या राजनैतिक – समाचार पत्रों ने महत्ती भूमिका निभाई। भारतीय संस्कृति, धर्म और दर्शन पर पाश्चात्य संस्कृति के प्रहार के साथ अंग्रेजों द्वारा भारत के आर्थिक शोषण के विरूद्ध इस काल में भारतीय समाचार पत्रों ने मजबूती से अपनी आवाज उठाई। बढ़ते हुए राष्ट्रीय आन्दोलन के हर चरण को, उसके प्रत्येक पहलू एवं राजनैतिक गतिविधियों को समाचार पत्रों ने प्रमुखता दी। जनता की लोकतांत्रिक संस्थाओं से अवगत कराने, संसार में होने वाली तमाम घटनाओं से भारतीयों जनमानस को अवगत कराया, सरकार की नीतियों को जनता के सामने रखने के साथ ही जनता के विचारों से सरकार को अवगत कराने का महत्वपूर्ण कार्य औपनिवेशिक काल के समाचार पत्रों ने बड़ी कुशलता से किया। दूसरे शब्दों में, समग्र रूप से जन चेतना के उद्‌भव और विकास तथा राष्ट्र निर्माण में राष्ट्रभक्त पत्रकारों द्वारा संचालित समाचार पत्रों ने सक्रिय और उल्लेखनीय भूमिका निभाई। औपनिवेशिक काल के ये समाचार पत्र और पत्रकार वर्तमान पत्रकारिता के लिये प्रेरणास्रोत हैं, जिनके लिये पत्रकारिता एक 'व्यवसाय' नहीं 'मिशन' थी। सामाजिक–सांस्कृतिक प्रगति में 'हाथ बंटाना, आजादी का उद्‌घोष करना और जन जागरण में सहयोग करना ही इस दौर के समाचार पत्रों का मुख्य लक्ष्य था। राष्ट्र–निर्माण हेतु जन चेतना के उद्‌भव और विकास के लिये देश सदैव इस काल के पत्र और पत्रकारों का ऋणी रहेगा और देशहित में प्रसारित होने वाले विचारों को आम नागरिकों तक पहुचायेगा।

सन्दर्भ–सूची :

1. डॉ0 ब्रह्ममानन्द : भारतीय स्वतन्त्रता आन्दोलन और उत्तर प्रदेश की हिन्दी पत्रकारिता, पृष्ठ–15
2. सेलिग मैन, आर ए एण्ड जानसन, अलविन (सम्पा0) : एन्साइक्लोपीडिया ऑफ सोशल साइंसेज, पृष्ठ–326
3. बी0एल0 ग्रोवर, यशपाल : आधुनिक भारत का इतिहास, एस चन्द एण्ड कम्पनी लि0, नई दिल्ली, 1999, पृष्ठ–264
4. रामलखन शुक्ल : आधुनिक भारत का इतिहास, हिन्दी माध्यम कार्यान्वय निदेशालय, दिल्ली विश्वविद्यालय, 1993, पृष्ठ–273
5. बी0एन0 पुरी : भारत का सामाजिक, सांस्कृतिक और आर्थिक इतिहास, मैकमिलन इण्डिया लि0, 1998, पृष्ठ–302
6. रामलखन शुक्ल : आधुनिक भारत का इतिहास, हिन्दी माध्यम कार्यान्वय निदेशालय, पृष्ठ–275
7. सुरेन्द्रनाथ बैनर्जी – ए नेशन इन मेकिंग, पृष्ठ–63
8. बिपिन चन्द्र : भारत का स्वतन्त्रता संघर्ष, हिन्दी माध्यम कार्यान्वय निदेशालय, दिल्ली विश्वविद्यालय, 1996, पृष्ठ–64,65
9. रामलखन शुक्ल : आधुनिक भारत का इतिहास, हिन्दी माध्यम कार्यान्वय निदेशालय, दिल्ली विश्वविद्यालय, पृष्ठ–275
10. बालकृष्ण भट्‌ट का लेख : हिन्दी–प्रदीप, जनवरी–फरवरी–मार्च, 1894
11. बिपिन चन्द्र : भारत का स्वतन्त्रता संघर्ष, हिन्दी माध्यम कार्यान्वय निदेशालय, दिल्ली विश्वविद्यालय, 1996, पृष्ठ – 66
12. बिपिन चन्द्र : वही, पृष्ठ – 67
13. महात्मा गांधी : 'हरिजन' के लेख का अंश, 25 मार्च, 1921